नेल्लूर, आंध्र प्रदेश में श्री एम. वेंकैया नायडु के सम्मान में आयोजित समारोह में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

श्री एम. वेंकैया नायडु जी; तथा

देवियो और सज्जनो....

---

1. भारत के पूर्व उप-राष्ट्रपति और राज्य सभा के पूर्व सभापति तथा लंबे समय तक मेरे सहयोगी रहे श्री एम. वेंकैया नायडु जी के सम्मान में आयोजित इस समारोह में भाग लेकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। मैं इस समारोह के आयोजकों का धन्यवाद करना चाहता हूँ कि उन्होंने मुझे वेंकैया जी के सम्मान में उनके मूल निवास स्थान पर आयोजित इस कार्यक्रम का हिस्सा बनने और उन्हें सम्मानित करने का अवसर दिया ।

2. एक लोकप्रिय राजनेता, कुशल राजनीतिज्ञ और प्रतिष्ठित जन नेता, श्री वेंकैया जी का सभी राजनैतिक दलों के नेता और अलग-अलग विचारधारा वाले लोग बहुत सम्मान करते हैं। अपने कई दशकों के

सार्वजनिक जीवन में आपने राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर अनेक महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है। और इन पदों पर रहते हुए आपने अलग-अलग तरीकों से हमारे राजनीतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में अपना अमूल्य योगदान दिया है।

3. नेल्लूर जिले के एक छोटे से गाँव से देश के दूसरे सर्वोच्च संवैधानिक पद पर आसीन होने तक की वेंकैया जी की अविश्वसनीय यात्रा हम सब लिए प्रेरणादायक है। यह हमारे लोकतंत्र की खूबसूरती को भी दर्शाता है कि किस प्रकार एक साधारण पृष्ठभूमि वाला व्यक्ति दृढ़ संकल्प, धैर्य, कड़ी मेहनत, ईमानदारी और निष्ठा के बल पर शिखर पर पहुँच सकता है।

4. वेंकैया जी का सानिध्य और साथ मुझे लंबे समय से मिलता रहा है। मैंने देखा है कि आप बहुत संवेदनशील और दयालु व्यक्ति हैं।

5. राजनीति में हर किसी की अपनी महत्वाकांक्षा होती है, हर किसी के अपने उद्देश्य होते हैं; लेकिन वेंकैया जी के लिए मैं कहूँगा कि आपने देश और लोगों की सेवा करने के लिए ही राजनीति में कदम रखा।

6. "राष्ट्र प्रथम, फिर पार्टी और स्वयं अंत में" यह आपकी धारणा है। इससे राष्ट्र निर्माण के प्रति आपका समर्पण स्पष्ट झलकता है। आपने लोगों से जुड़कर राजनीति की है, फिर चाहे आंध्र प्रदेश हो या पूरा देश।

7. वेंकैया जी अपने छात्र जीवन के दौरान ही एक समर्पित स्वयंसेवक के रूप में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) से जुड़ गए थे। इस संगठन ने उनके जीवन को बहुत प्रभावित किया और उनके व्यक्तित्व को एक नया आयाम दिया।

8. निःस्वार्थ सेवा, आत्म-अनुशासन, समाज सुधार, सामाजिक चेतना, सामाजिक आंदोलन और राष्ट्र निर्माण की भावना हमेशा आपके आदर्श रहे हैं। विद्यार्थी जीवन से ही आप सामान्य जन, विशेष रूप से किसानों और समाज के दलित वर्गों के कल्याण के प्रति पूरी तरह से समर्पित रहे हैं।

9. कम उम्र में ही आप राजनीतिक और सामाजिक जीवन से जुड़ गए। युवा जीवन से आप समाज से जुड़ी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे थे। वर्ष 1975 में जब देश के लोकतंत्र के ऊपर आपातकाल का खतरा आया तब आपने देश के लोकतंत्र की रक्षा के लिए संघर्ष

किया। इसके लिए आप सड़कों पर भी उतरें और जेल भी गए। मगर आपका संघर्ष हमेशा बना रहा।

10. आज हम सब यहां नेल्लूर में इस समारोह में हैं। इसी ज़िले की विधान सभा सीट से आप पहली बार आंध्र प्रदेश विधान सभा के लिए विधायक चुने गए थे। आपका जीवन निरंतर मेहनत कर आगे बढ़ने का एक बेहतरीन उदाहरण है।

11. आज की पीढ़ी के युवा नेता आपसे सीख सकते हैं कि आगे बढ़ने के लिए हमारा साध्य और हमारे साधन पवित्र होने चाहिए। आपने समाज और दीन-हीन की सेवा का एक लक्ष्य लेकर सदा काम किया, इसी का परिणाम है कि ईश्वर ने आपको मानव कल्याण के लिए इतना सक्षम बनाया कि अपने सार्वजनिक जीवन में आपने अनेक लोगों का जीवन बदल दिया।

12. श्री वेंकैया नायडु जी, आपको आपके प्रभावशाली वक्तव्य कौशल के लिए भी जाना जाता है। आपकी अभिलाषा सदा ही जन-जन से जुडने की रही है। आप अपनी मातृ भाषा में तो पारंगत/माहिर हो ही, लेकिन देश के और अधिक लोगों से आप सीधे तौर पर जुड़ पाओ, इसके लिए आपने हिन्दी भी अच्छी तरह सीखी है।

13. ये आपके व्यक्तित्व और भाषण शैली का ही प्रभाव है कि आज हिन्दी के मंचों पर भी आपको सुनने के लिए बहुत लोग आते हैं।

14. हमेशा कुछ ना कुछ सीखते रहने की चाह, अपने समर्पण, और प्रतिबद्धता के कारण आपकी लोकप्रियता हमेशा बढ़ती रही है। और इसका सुपरिणाम भी आपको मिला कि आपने भाजपा संगठन और विधायी जीवन में निरंतर प्रगति की।

15. एक आम साधारण कार्यकर्ता से लेकर देश के उप राष्ट्रपति पद पर पहुँचने की आपकी यात्रा अत्यंत प्रेरणादायी है। यह हमारे नौजवानों को हमेशा आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। आज जो युवा समाज और जनसेवा के क्षेत्र में आना चाहते हैं, वो आपसे काफी कुछ सीख सकते हैं। आपके जीवन संघर्षों का अध्ययन कर आज के नौजवान राजनीति की मुश्किलों और सहजता को समझ सकते हैं।

16. आपके अंदर हमेशा काम करते रहने का समर्पण रहा है। जब तक कोई कार्य चाहे संगठन से जुड़ा हो, चाहे जनसेवा से जुड़ा हो, चाहे विधान निर्माण से जुड़ा हो; आपकी यह धारणा रही है कि जब तक कोई कार्य पूरा नहीं हो जाता, आप उसके लिए लगे रहते हो।

17. अपनी वैचारिक प्रतिबद्धता और संगठनात्मक कौशल के कारण आप वर्ष 2003 में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। मुझे वेंकैया नायडु जी के कुशल नेतृत्व में 1997-2003 तक भारतीय जनता युवा मोर्चा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

18. पार्टी अध्यक्ष के रूप में आपने जमीनी और राष्ट्रीय स्तर पर पार्टी को मजबूत बनाने का कार्य किया। आपने बूथ स्तर तक पार्टी को मजबूती दी। तेलुगू भाषी राज्य से होने के बावजूद नायडु जी ने उत्तर भारत में जनसभाओं को संबोधित किया। और आम जनता ने भी आपके संबोधनों को खुल कर सराहा। आपकी प्रशंसा की।

19. श्रीमान वेंकैया जी, अपनी पूरी संसदीय यात्रा के दौरान आप या तो विपक्ष में रहे या मंत्री बने। इस दौरान अपने सभी साथी सांसदों (पक्ष और विपक्ष) के प्रति आपका नजरिया सदैव निष्पक्ष रहा। विपक्षी दलों के प्रति भी आपका व्यवहार सदैव सौहार्दपूर्ण रहा । एक मंत्री के रूप में आपने जो भी मंत्रालय संभाला उसमें आपके किए गए कार्यो ने एक अलग छाप छोड़ी है।

20. संसद के युवा सदस्यों को आपके वक्तव्य कौशल का लाभ मिला है। संबंधित विषय पर आपके गहन ज्ञान, आपकी मर्यादापूर्ण शब्दावली और आपकी हाजिर जवाबी ने आपके राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों को बेहद प्रभावित किया है।

21. राज्य सभा के सभापति के रूप में भी नायडु जी आपने सदन की गरिमा को बढ़ाते हुए सभी को साथ लेकर सदन के कामकाज का सुचारू और व्यवस्थित संचालन सुनिश्चित करने का प्रयास किया।

22. आपने हमेशा अपने कर्त्तव्यों और जिम्मेदारियों को पूरे मन से निभाया है और सदैव ही अपने अपने व्यवहार व आचरण से सदन की सर्वोच्चता को बनाए रखा है। अपने मिलनसार स्वभाव, मधुर व्यवहार और खुशमिजाज प्रकृति के कारण आप सदन में सभी के प्रिय रहे हैं ।

23. राज्य सभा के सभापति के रूप में आपकी नेतृत्व क्षमता और आपके अनुशासन ने संसद के उच्च सदन की प्रतिबद्धता और कार्य उत्पादकता को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। आपके कार्यकाल के दौरान, राज्य सभा के कार्य निष्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। सभा में सदस्यों की उपस्थिति में भी वृद्धि हुई।

24. आपने संवाद, संपर्क और समन्वय से सभा का केवल सुचारू रूप से संचालन ही नहीं किया, बल्कि सदन में हमेशा सकारात्मक वातावरण बनाए रखा और हर सदस्य को डिबेट में भाग लेने, प्रश्न पूछने और अपनी बात रखने के लिए प्रेरित किया है।

25. सभा की कार्यवाहियों के दौरान जब कभी भी सदस्यों के बीच टकराव की स्थिति पैदा हुई, तो आपने अपनी प्रसिद्ध उक्ति से उत्तेजित सदस्यों को शांत कराने में सफलता पाई। आप अक्सर कहा करते हो-

26. "लेट द गवर्नमेंट प्रपोज, लेट द अपोजिशन अपोज, लेट द हाउस डिस्पोज"।

27. चाहे सभा के प्रक्रिया और कार्य संचालन की बात हो, चाहे संगठन एवं जनता के प्रति आपकी निष्ठा हो, सहयोगियों के प्रति आपका स्नेह या सबको साथ लेकर चलाने की आपकी रीति-नीति; आपके व्यवहार – आपके आचरण से हम हमेशा ही प्रभावित रहे हैं। भारतीय भाषाओं के प्रति आपके प्रेम से भी हम सभी भली-भांति परिचित हैं।

28. राज्य सभा के सभापति के रूप में आपने सभी भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने का प्रशंसनीय कार्य किया। सदस्य अपनी मातृ भाषा में

बोल सकें, सहजता से अपनी बात रख सकें, इसके लिए आपने राज्य सभा में समुचित प्रबंध किए।

29. व्यक्तिगत रूप से मुझे आपको राज्य सभा के सभापति के रूप में निकट से देखने और लोक सभा अध्यक्ष के रूप में आपके साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है ।

30. आपके अनुभव और ज्ञान भविष्य में सभी सांसदों के लिए मूल्यवान धरोहर बने रहेंगे। आपकी जीवन यात्रा उन लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत है, जो सार्वजनिक जीवन अपनाना चाहते हैं। मैं आदरणीय नायडु जी को हार्दिक बधाई देता हूँ। मैं आपके उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ। ईश्वर आपको दीर्घ आयु दें, सक्रिय जीवन दें।

31. हम सभी की मंगल कामना है कि अगले अनेक वर्षों तक राष्ट्र और जनता को आपकी फलदायी सेवा का लाभ मिलता रहे। धन्यवाद, जय हिंद।